संयुक्त राज्य अमेरिका का यूनेस्को में पुनः प्रवेश

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में अमेरिका के द्वारा संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) में पुनः शामिल होने की घोषणा की गयी।

यूनेस्को के बारे में

- यूनेस्को, संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था है।
- इसका गठन 16 नवम्बर, 1945 को हुआ था।
- उद्देश्य - शिक्षा एवं संस्कृति के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से शांति एवं सुरक्षा की स्थापना करना , ताकि संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में वर्णित न्याय, कानून का शासन, मानवाधिकार एवं मौलिक स्वतंत्रता हेतु वैश्विक सहमति बन सके।

अमेरिका द्वारा यूनेस्को से वापसी का कारण

- ओबामा प्रशासन द्वारा 2011 में वित्त पोषण बंद कर दिया गया था और वर्ष 2017 में, ट्रम्प प्रशासन द्वारा इस संगठन से बाहर निकलने की घोषणा की गयी।
- ट्रम्प प्रशासन के द्वारा न केवल यूनेस्को, बल्कि पेरिस समझौते से बाहर निकलने और WHO के वित्त पोषण को रोकने का भी प्रयास किया गया था।
- महामारी के दौरान, 2020 में, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प द्वारा विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) को वित्तपोषित न करने की घोषणा की गयी। इसके अलावा, अमेरिका द्वारा पेरिस समझौते से हटने का फैसला ट्रम्पिस्टिक ग्लोबल नियरेज का भाग था, ताकि संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा चीन और भारत जैसे प्रमुख प्राधिकारियों को झुकाया जा सके।
- ट्रम्प प्रशासन को आउट मार्केट के लिए प्रेरित करने वाली 'अमेरिका फर्स्ट' की नीति विभिन्न संगठनों से बाहर जाने का कारण मानी जाती है।

पुनः प्रवेश का कारण

- हाल ही में यूनेस्को में अमेरिका की वापसी का मुख्य कारण 'चीन' है क्योकिं अमेरिका की गैरहाजिरी में भविष्य की तकनीकी दिशाओं से जुड़ी सूचनाओं को तय करने में चीन की भूमिका ज्यादा प्रभावी हो सकती है।
- पहली बार संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा किसी बहुपक्षीय संधि में पुनः प्रवेश पर खुलकर 'चीन' को प्रमुख कारण के रूप में पेश किया गया है।
- परंतु हालिया राजनीतिक बदलाव को देखते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति जोसेफ बाइडेन के द्वारा ट्रम्पिस्टिक ग्लोबल नियरेज को हटाते हुए सजीव संधि में पुनः शामिल होने का फैसला लिया गया है।
- अमेरिका, इजरायल का प्रबल समर्थक है और फिलिस्तीन को मान्यता नहीं देता है। परंतु यह ध्यान रखने की आवश्कता है कि समग्र क्षेत्र में होने वाला विकास, ऐतिहासिक तकनीकी विकास से थोड़ा अलग होता है।

Y गुणसूत्र: 'पुरुषत्व का स्वामी'

चर्चा में क्यों ?

- यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया स्कूल ऑफ मेडिसिन, यू.एस., और उप्साला विश्वविद्यालय, स्वीडन के हालिया शोध के अनुसार LoY क्रोमोसोम में उम्र के साथ बदलाव देखने को मिलता है जो कई दुर्बल चिकित्सीय स्थितियों से सम्बद्ध है।

शोध का निष्कर्ष

- कई जानवरों की प्रजातियों पर भविष्य में Y गुणसूत्र खोने का डर मंडरा रहा है, जबकि कुछ प्रजातियों ने स्वाभाविक रूप से इस गुणसूत्र को खो दिया है।
- गुणसूत्र खो चुके जानवर, सेक्स-क्रोमोसोम टर्नओवर की प्रक्रिया को समझने में सहयता करते हैं और दूसरे क्रोमोसोम को सेक्स क्रोमोसोम में बदलने का मार्ग प्रदान करते हैं।
- चूहों पर अध्ययन के आधार पर पुरुषों में उम्र के बदलाव के साथ Y गुणसूत्र (LoY) की कमी देखने को मिलती है और यह कैंसर की उच्च आवृत्ति, अल्जाइमर रोग तथा कम उम्र के साथ जुड़ा हुआ है।
- इसमें पुनर्संयोजन की बहुत कम क्षमता है, पीढ़ियों की विरासत को आगे बढ़ाते हुए, कम Y गुणसूत्र को पिता से पुत्र तक स्थानांतरित किया गया है।

मनुष्यों में, प्रत्येक कोशिका नाभिक में 23 जोड़े गुणसूत्र होते हैं, कुल 46 गुणसूत्र होते हैं।
पहले 22 जोड़े ऑटोसोम्स (समजातीय गुणसूत्र) कहलाते हैं।
गुणसूत्रों के 23वें जोड़े को एलोसोम्स कहते हैं। इनमें ज्यादातर महिलाओं में दो X क्रोमोसोम होते हैं और ज्यादातर पुरुषों में एक X क्रोमोसोम और एक Y क्रोमोसोम होता है । इसलिए महिलाओं में 23 समरूप गुणसूत्र जोड़े होते हैं, जबकि पुरुषों में 22 होते हैं।
X और Y गुणसूत्रों में समरूपता क्षेत्र को स्यूडोऑटोसोमल क्षेत्र कहा जाता है । Y गुणसूत्र 'लिंग-निर्धारण' पुरुष को निर्धारित करता है।
इसलिए Y गुणसूत्र अक्सर "पुरुषत्व का स्वामी" कहलाता है।

- अमेरिकन जर्नल ऑफ ह्यूमन जेनेटिक्स (2003) में प्रकाशित आनुवंशिक अध्ययन के अनुसार सभी पुरुषों में से लगभग 0.5% को मंगोल सम्राट चंगेज खान या उनके वंशजों में से एक Y गुणसूत्र विरासत में मिला है।

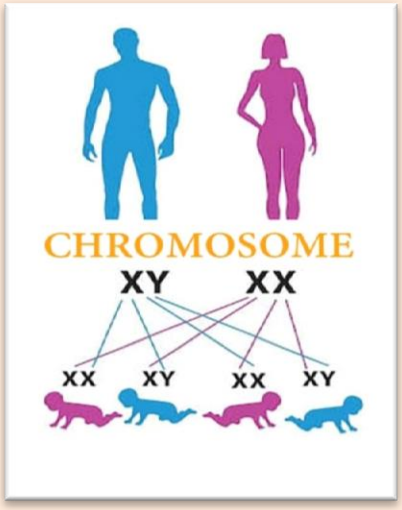

- नेचर इकोलॉजी एंड इवोल्यूशन नामक पत्रिका के अनुसार फ्रांस के नेशनल सेंटर फॉर साइंटिफिक रिसर्च से फल मक्खियों के हालिया अध्ययन के अनुसार Y क्रोमोसोम की उपस्थिति के बजाय जानवर के फेनोटाइपिक सेक्स को दीर्घायु होने का श्रेय दिया गया। फेनोटाइपिक सेक्स एक व्यक्ति के लिंग को संदर्भित करता है जैसा कि उनके जननांग से निकाला जाता है।
- वैज्ञानिकों ने लिंगों के बीच जीवन काल में पर्याप्त अंतर पाया जिसके तहत मादाएं, पुरुषों की तुलना में अधिक समय तक जीवित रहती हैं। इसका कारण पुरुषों में एक दूसरे Y गुणसूत्र की अनुपस्थिति को बताया गया और X गुणसूत्र के हानिकारक उत्परिवर्तन को उजागर किया गया है।

प्राइड फ्लैग

चर्चा में क्यों?

- 2021 में, इंटरसेक्स इक्वैलिटी राइट्स (UK) द्वारा इंटरसेक्स-इनक्लूसिव प्राइड फ्लैग बनाने और शामिल करने के लिए प्राइड प्रोग्रेस फ्लैग डिजाइन को अपनाने का फैसला किया गया।

प्राइड फ्लैग क्या है ?

- प्राइड फ़्लैग, LGBT समुदाय के किसी सेगमेंट का प्रतिनिधित्व करता है। LGBT फ़्लैग और क्वीर फ़्लैग शब्द अक्सर एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग किए जाते हैं।
- प्राइड फ्लैग विभिन्न यौन अभिविन्यास, रोमांटिक अभिविन्यास, लिंग पहचान, उपसंस्कृति और क्षेत्रीय उद्देश्यों के साथ-साथ LGBT समुदाय के एक पूरक के रूप में प्रस्तुत करता है।

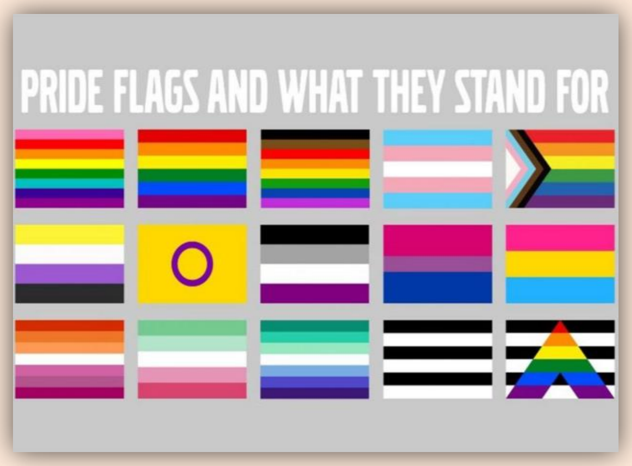

- 1978 में गिल्बर्ट बेकर द्वारा निर्मित, प्रतिष्ठित प्राइड रेनबो फ्लैग में मूल रूप से आठ धारियां थीं। रंगों में कामुकता का प्रतिनिधित्व करने के लिए गुलाबी, चिकित्सा के लिए लाल, सूरज के लिए पीला, प्रकृति के साथ शांति के लिए हरा, कला के लिए फिरोजा, सद्भाव के लिए इंडिगो और आत्मा के लिए बैंगनी शामिल था।

KARMANYEVADHIKARASTE MA PHALESHU KADAACHAN
THE STUDY
An Institute for IAS

210, Virat Bhawan, 2nd Floor Near Post Office, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Contact Us 9999516388, 8595638669

- सभी प्राइड फ्लैग LGBT मामलों से संबंधित नहीं हैं क्योंकि विश्व में 15 प्रकार के प्राइड फ्लैग आमतौर पर देखने को मिलते हैं,कुछ इस प्रकार हैं-

गिल्बर्ट बेकर गौरव ध्वज

- यह 1977 में गिल्बर्ट बेकर, एक कलाकार, कार्यकर्त्ता और खुले तौर पर समलैंगिक सैन्य दिग्गज द्वारा बनाया गया था। LGBTQ अधिकारों की लड़ाई में एक ऐतिहासिक शख्सियत हार्वे मिल्क द्वारा कतारबद्ध समुदाय के लिए एक झंडा बनाने के लिए बेकर ने आठ अलग-अलग रंगों के साथ एक इंद्रधनुषी झंडा बनाया।

फिलाडेल्फिया गौरव ध्वज

- फ़िलाडेल्फ़िया प्राइड फ़्लैग LGBTQ+ समुदाय में अधिक समावेशिता की मांग हेतु बनाया गया। फिलाडेल्फिया में "मोर कलर मोर प्राइड" अभियान के हिस्से के रूप में 2017 में ध्वज लॉन्च किया गया था। इसमें पारंपरिक गौरव ध्वज में काले और भूरे रंग की धारियों को जोड़ना रंग के लोगों का प्रतीक है, जो ऐतिहासिक रूप से हमेशा मुख्यधारा के समलैंगिक अधिकारों के आंदोलन के पहलुओं में शामिल नहीं थे।

ट्रांसजेंडर ध्वज

- ट्रांसजेंडर ध्वज पहली बार 1999 में एक ट्रांसजेंडर महिला मोनिका हेल्म्स द्वारा बनाया गया था। क्रमशः बच्चों, लड़कों और लड़कियों से जुड़े पारंपरिक रंग हल्का नीला और गुलाबी हैं। सफेद उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो इंटरसेक्स हैं, संक्रमण कर रहे हैं या जो किसी भी लिंग के साथ पहचाने नहीं जाते हैं।

नई प्रगति प्राइड फ्लैग

- LGBTQ+ समुदाय और बड़े पैमाने पर समाज की विकसित प्रकृति को देखते हुए, प्रोग्रेस प्राइड फ्लैग इनमें से कई झंडों को एकीकृत करता है।

THE STUDY
An Institute for IAS

- "समावेश और प्रगति" पर बल देने हेतु इसे पुनः डिजाइन किया गया है।
- आधुनिक गौरव ध्वज में विभिन्न रंग की पट्टियां लोगों के अनुभवों का प्रतिनिधित्व करती हैं, साथ ही ये पट्टियां ट्रांसजेंडर, लिंग गैर-अनुरूपता (GNC) या अपरिभाषित के रूप में पहचान करती हैं।
- डैनियल क्वासर के झंडे में ट्रांस फ्लैग के रंग शामिल हैं, साथ ही काले और भूरे रंग की धारियां 2017 के फिलाडेल्फिया प्राइड फ्लैग पर लगाई गयी हैं, जो काले और भूरे लोगों की क्वीर और ट्रांस पहचान का प्रतिनिधित्व करने की मांग करती हैं। वे दो धारियाँ HIV/AIDS के साथ जी रहे लोगों का भी प्रतिनिधित्व करती हैं।
- 2021 में, इंटरसेक्स फ्लैग को शामिल करने के लिए इंटरसेक्स इक्वेलिटी राइट्स (यूके) के वैलेंटिनो वेचिएती द्वारा प्रोग्रेस प्राइड फ्लैग को संशोधित किया गया था। नए डिजाइन में, प्रोग्रेस फ्लैग के शेवरॉन में बीच में एक बैंगनी सर्कल के साथ एक पीला त्रिकोण शामिल है। यह वास्तव में डेनियल क्वासर द्वारा 2018 में बनाए गए पिछले प्रोग्रेस प्राइड फ्लैग का एक नया संस्करण है।

भारत का पक्ष

- भारत में कई संगठन अपने कार्यक्रमों में पुराने इंद्रधनुषी गौरव ध्वज का उपयोग करते हैं, इसके साथ-साथ LGBTQIA+ समुदाय के अधिक समावेशी प्रतिनिधित्व के रूप में नई विविधता को तेजी से स्वीकार किया जा रहा है।
- जून महीने को दुनिया भर में 'प्राइड मंथ' के रूप में मान्यता प्राप्त है, LGBTQIA+ समुदाय का जश्न मनाने के लिए पूरे भारत में कई कार्यक्रमों से चिह्नित किया जाता है।
- प्राइड फ्लैग का उपयोग कार्यकर्त्ताओं, समुदाय के सदस्यों और सहयोगियों द्वारा प्रतिरोध एवं स्वीकृति के प्रतीक के रूप में किया गया था। इसे प्रसिद्ध अमेरिकी कलाकार और कार्यकर्त्ता गिल्बर्ट बेकर द्वारा डिजाइन किया गया था।

इसे इंटरसेक्स-इनक्लूसिव प्रोग्रेस प्राइड फ्लैग क्यों कहा जाता है?

- संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, इंटरसेक्स लोग सेक्स विशेषताओं (जननांगों, गोनाड और क्रोमोसोम पैटर्न सहित) के साथ पैदा होते हैं जो पुरुष या महिला के शरीर की विशिष्ट द्विआधारी धारणाओं के अनुरूप नहीं होते हैं।
- 2021 में, इंटरसेक्स इक्वैलिटी राइट्स (यूके) ने इंटरसेक्स-इनक्लूसिव प्राइड फ्लैग बनाने हेतु इंटरसेक्स फ्लैग को शामिल करने के लिए प्राइड प्रोग्रेस फ्लैग डिजाइन को अपनाने का फैसला किया, जिसमें इंटरसेक्स इक्वैलिटी राइट्स एक्टिविस्ट को रिडिजाइन किया गया है। इंटरसेक्स ध्वज में पीले और बैंगनी रंगों का उपयोग नीले और गुलाबी रंग के प्रतिरूप के रूप में किया जाता है, जिन्हें पारंपरिक रूप से लिंग के रंग के रूप में देखा जाता है।

अनाईकट्टी हाथी आवास

चर्चा में क्यों ?

- 'राइट ऑफ पैसेज:एलिफेंट कॉरिडोर ऑफ इंडिया' शीर्षक वाली रिपोर्ट के अनुसार अनाईकट्टी को राज्य सरकार द्वारा द्वारा एक हाथी गलियारे के रूप में अधिसूचित नहीं किए जाने के कारण हाथियों के संरक्षण प्रयासों में बाधा आ रही है।

हाथी गलियारे के बारे में :

- हाथी गलियारा भूमि का एक संकीर्ण भाग होता है जो दो बड़े आवास क्षेत्रों को आपस में जोड़ता है। हाथी गलियारों के विकास से हाथियों को जंगलों में ही न केवल रोकना संभव होता है, बल्कि उनके आबादी वाले इलाक़ों में घुसने की घटनाओं में भी कमी आती है।
- "हाथी लंबी दूरी के जानवर हैं और आमतौर पर एक निर्धारित पथ का अनुसरण करते हैं जिसका वे युगों से अनुसरण कर रहे हैं। ये मार्ग ही गलियारों के रूप में जाने जाते हैं।
- इस वर्ष मानव - हाथी संघर्ष के कारण यहाँ छह लोगों एवं 12 हाथियों की मृत्यु देखने को मिली है।

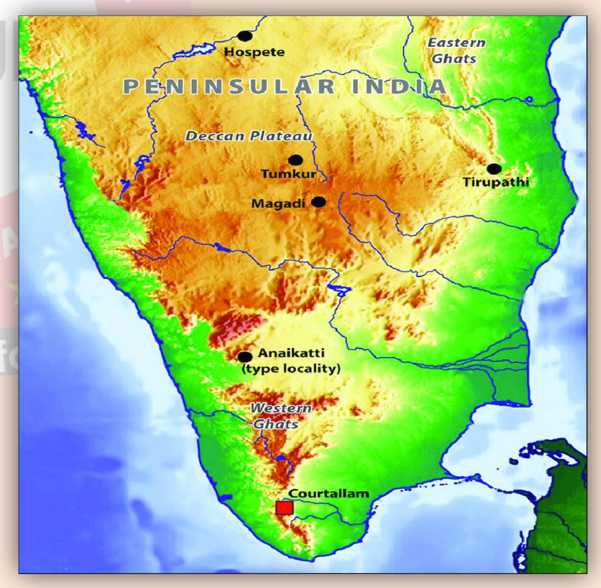

अनाईकट्टी में मानव - हाथी संघर्ष के कारण

- पश्चिमी घाटों का यह क्षेत्र हाथियों के राजमार्ग का एक हिस्सा रहा है, परंतु आवश्यक मंजूरी के बिना रिसॉर्ट्स और फार्महाउसों की अनियंत्रित वृद्धि तमिलनाडु-केरल सीमा को हाथियों के लिए असुरक्षित बनाती है। चूंकि ऐसी भूमि पर नई इमारतें हैं जिनमें अधिकांशतः बिजली की बाड़ पाई जाती है।

- कोयम्बटूर जिले में ऐसे दो मार्गों में से एक है, जिसे भारतीय वन्यजीव ट्रस्ट द्वारा इसके दूसरे संस्करण में "उच्च पारिस्थितिक प्राथमिकता" के रूप में पहचाना गया है, परंतु तमिलनाडु के कोयम्बटूर और केरल के पलक्कड़ जिलों को जोड़ने वाली सड़क महत्वपूर्ण अनाइकट्टी उत्तर तथा अनाईकट्टी दक्षिण हाथी कॉरिडोर से होकर गुजरती है।

- अनाईकट्टी गलियारा कोयंबटूर वन प्रभाग के कोयम्बटूर और पेरियानाइकनपलायम वन रेंज के अंतर्गत आता है, "जंगल के खड़ी पहाडियों वाले भागों से बचने के लिए, हाथी अक्सर मैदानों के किनारों को पार करना पसंद करते हैं क्योंकि उनके झुंड में छोटे बच्चे भी होते हैं।
- ईंट भट्ठा निर्माताओं द्वारा खोदे गए बड़े-बड़े गड्ढों के कारण हाथियों के मार्ग को और भी मुश्किल बना दिया है। हालांकि, 2021 में मद्रास उच्च न्यायालय के आदेश के बाद 177 ईंट भट्ठा इकाईयों को बंद कर दिया गया है, परन्तु गड्ढे व्यापकता से देखने को मिलते हैं।
- तमिलनाडु में WTI द्वारा पहचाने गए 16 गलियारों में से केवल एक को राज्य द्वारा अधिसूचित किया गया है जो एक जैविक संपदा के लिए खतरा पैदा कर रहा है।

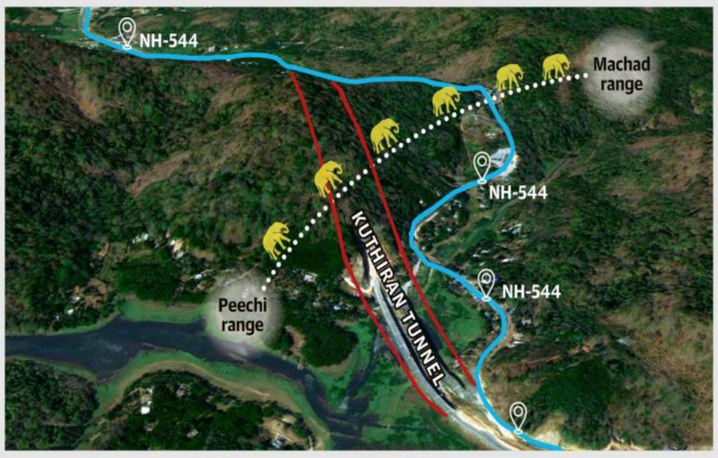

- WTI अध्ययन, 2017 में प्रकाशित, ने गलियारे के लिए मौजूदा खतरों का उल्लेख वाहनों के यातायात और क्षेत्र में कई संस्थानों के रूप में किया था,जिसमें सरकार का अपना सलीम अली सेंटर फॉर ऑर्निथोलॉजी एंड नेचुरल हिस्ट्री भी शामिल था।
- कुथिरन सुरंग भी अप्रत्याशित मानव-वन्य जीव संघर्ष का कारण बनी है।

उपाय

- वन्यजीव अधिकारियों तथा पशु चिकित्सकों द्वारा संघर्ष समस्या का हल निकालने के लिये रणनीति तैयार की जानी चाहिए। इसके अनुसार, अकेले भ्रमण करने वाले आवारा हाथियों तथा अन्य प्रकार की परेशानी उत्पन्न करने वाले हाथियों को स्थानांतरित कर दिया जाना चाहिए।

210, Virat Bhawan, 2nd Floor Near Post Office, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Contact Us 9999516388, 8595638669

KARMANYEVADHIKARASTE
THE STUDY
MAA PHALESHU KADAACHAN
An Institute for IAS